



सुन्दरां वरदां गौरीं सायुधाष्टमहाभुजाम् ।
आर्द्रचित्तां नमोऽस्तु त्वां सिद्धिदां
करुणामयीम् ॥



संक्षिप्त परिचय

श्री रामचन्द्र की कृपा , भगवती जगदंबा और कुलदेवी कन्दाजा माताजी के आशीर्वाद से मेरे माता-पिता द्वारा और मेरी नानी पूज्य लीला बा, परिवार जन, गुरुजी इन सभी की प्रेरणा से कर्मकांड के ग्रंथों के आधारीत हमने एक छोटा सा प्रयास इस पुस्तक बनाने का किया है ।

पुस्तक का नाम **देवप्रयाग** रखा है और प्रथम Google Android, apple IOS Application निशुल्क सभी विप्रगण और जो संस्कृत के जिज्ञासु हैं । इन सभी के लिए हमने रखा है । हम आशा रखते हैं की आप सभी को यह पसंद आये । अगर त्रुटी रह गई है तो हमें क्षमा करे । सभी का सहयोग रहे वही हम आशा रखते हैं ।

चंद्रेशभाई प्रभुलाल भट्ट (मूल गाँव - बोरिया)

हाल वल्लभविध्यानगर - आणंद.

धोबीघाट मोटाबजार इस्कोन मंदिर के पास

फोन- ९९१३३९९९८ (9913399998)

सहभागी- इला चंद्रेश भट्ट - इषत चंद्रेश भट्ट - काजल इशत भट्ट

तथा श्री गोविंदभाई त्रिवेदी (मूल गाँव - सोजित्रा हाल- विध्यानगर

कम्प्युटर टाईपिंग - कृपा मनीषभाई शात्री - पेटलाद

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥



मेरे पिताजी स्व.प्रभुलाल भट्ट
और माताजी ग.स्व.दक्षाबहन को प्रणाम
पूर्वक चरणों में यह
देव प्रयाग पुस्तक अर्पित
श्री राम परिवार

वैदिक संस्कृति का इतिहास

"वेद" मूल स्रोत हैं । यज्ञ वेद मंत्र द्वारा परिपूर्ण होता है ।

वैदिक साहित्य चार चरण में हुआ है । संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद कहते हैं ।

मंत्रों और स्तुतियों के संग्रह को "संहिता" कहते हैं । ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद मंत्रों की संहिता ही हैं और अनेक शाखाएं हैं । संहिताओं के मंत्र यज्ञ में उच्चारण किए जाते हैं । वेदमंत्रों में इंद्र, अग्नि, वरुण, सूर्य, सोम, उषा आदि देवताओं की संगीतमय स्तुतियाँ सुरक्षित हैं । यज्ञ और देवोपासना ही वैदिक धर्म का मूल रूप था ।

चार वेद मंत्र की मंत्रसंहिताओं के ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद अलग-अलग मिलते हैं । शत पथ, तांडव आदि ब्राह्मण प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण हैं । ऐतरेय, तैत्तिरीय आदि के नाम से आरण्यक और उपनिषद दोनों मिलते हैं । इनके अतिरिक्त ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य आदि प्राचीन उपनिषद चिंतन के आदिस्त्रोत हैं ।

वेद

वेद प्राचीन भारत के पवित्रतम साहित्य हैं । भारतीय संस्कृति में वेद सनातन वर्णाश्रमधर्म के मूल और सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं ।

जिन्हें ईश्वर की वाणी समझा जाता है। ये विश्व के उन प्राचीन

तम धार्मिक ग्रंथों में हैं जिनके पवित्र मंत्र आज भी बड़ी आस्था और श्रद्धा से पढ़े-सुने जाते हैं ।

'वेद' शब्द संस्कृत भाषा के 'विद ज्ञान' धातु से कर्णार्ध में घञ् प्रत्यय लगने से ज्ञानार्थक वेद शब्द बना है,

इस तरह वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान के ग्रंथ' हैं ।

वेद धातु से 'विदित' (जाना हुआ), 'विद्या' (ज्ञान) , 'विद्वान' (ज्ञानी) जैसे शब्द आए हैं ।

वैदिकों का यह सर्वस्वग्रन्थ 'वेदत्रयी' के नाम से भी विदित है ।

प्रथम वेद ग्रन्थ एक ही था और इसका नाम यजुर्वेद है ।

एकैवासीद् यजुर्वेद चतुर्धाः व्यभजत् पुनः वही यजुर्वेद पुनः । और यह यजुर्वेद पुनः ऋक् यजुस् सामः के रूप में प्रसिद्ध हुआ और वह 'त्रयी' कह-लाया ।

वैदिक परंपरा के दो प्रकार के हैं । १. ब्रह्म परंपरा और २.

आदित्य परंपरा । दोनों परंपरा के वेदत्रयी परंपरा प्राचीन काल में प्रसिद्ध था ।

और वेद के समकक्ष में अथर्व भी संलग्न हो गया ।

फिर 'त्रयी' के जगह 'चतुर्वेद' कह-लाने लगे । गुरु के रुष्ट होने पर जिन्होंने सभी वेद को आदित्य से प्राप्त किया है उन

याज्ञवल्क्य ने अपनी स्मृति में वेदत्रयी के बाद और पुराणों के आगे अथर्व को सम्मिलित कर बोला वेदाऽथर्वपुराणानि इति ॥

आज 'चतुर्वेद' के रूप में ज्ञात इन का विवरण इस प्रकार हैं -

ऋग्वेद-

सबसे प्राचीन वेद-ज्ञान हेतु लगभग १० हजार मंत्र । इसमें देवताओं के गुणों का वर्णन और प्रकाश के लिए मंत्र हैं-सभी कविता-छन्द रूप में ।

सामवेद -उपासना में गाने के लिये संगीतमय मंत्र हैं-१९७५ मंत्र।

यजुर्वेद - कर्म (क्रिया) , यज्ञ (समर्पण) की प्रक्रिया के लिये गद्यात्मक मंत्र हैं-३७५० मंत्र । शाखा गत (अलग-अलग प्रमाण हैं)

अथर्ववेद - इसमें गुण, धर्म, आरोग्य, यज्ञ के लिये कवितामयी मंत्र हैं-७२६० मंत्र । इसमें जादू-टोना की, मारण, मोहन, स्तंभ आदि से सम्बद्ध मंत्र भी हैं जो इससे पूर्व के वेदत्रयी में नहीं हैं । वेदों को अपौरुषेय (जिसे कोई व्यक्ति न कर सकता हो, यानी ईश्वर कृत) माना जाता है । यह ज्ञान विराटपुरुष से वा कारणब्रह्म से श्रुतिपरम्परा के माध्यम से सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने प्राप्त किया माना जाता है ।

इन्हें श्रुति भी कहते हैं जिसका अर्थ है 'सुना हुआ ज्ञान' ।

अन्य हिन्दू ग्रंथों को स्मृति कहते हैं यानी वेदज्ञ मनुष्यों की वेदानुगतबुद्धि या स्मृति पर आधारित ग्रन्थ। वेद के समग्र भाग

को मन्त्रसंहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद के रूपमें भी जाना जाता हैं ।

इनमें प्रयुक्त भाषा वैदिकसंस्कृत कहलाती हैं जो लौकिक संस्कृत से कुछ अलग हैं । ऐतिहासिक रूप से प्राचीन भारत और हिन्दू-आर्य जाति के बारे में वेदों को एक अच्छा सन्दर्भश्रोत माना जाता हैं । संस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को लेकर भी इनका साहित्यिक महत्त्व बना हुआ हैं । इसको पढ़ा ने के लिए छः उपांगों की व्यवस्था थी । शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द और ज्योतिष के अध्ययन के बाद ही प्राचीन काल में वेदाध्ययन पूर्ण माना जाता था । प्राचीन काल के ब्रह्मा, वशिष्ठ, शक्ति, पराशर, वेदव्यास, जैमिनी याज्ञवल्क्य कात्यायन इत्यादि ऋषियों को वेदों का अच्छा ज्ञाता माना जाता हैं । मध्यकाल में रचित व्याख्याओं में सायणका रचा चतुर्वेदभाष्य जो "माधवीय वेदार्थदीपिका" बहुत मान्य हैं ।

यूरोप के विद्वानों का वेदों के बारे में मत हिन्दू-आर्य जाति के इतिहास की जिज्ञासा से प्रेरित रही हैं । अठारहवीं सदी उपरांत यूरोपियनों के वेदों और उपनिषदों में रूचि आने के बाद भी इनके अर्थों पर विद्वानों में असहमति बनी रही हैं ।

ता. २८-११-२०२०

संवत २०७७ कार्तिक सुदी १३ शनिवार ।